दस हज़ार बुद्धों के लिए एक सौ गाथाएं

मा धर्म ज्योति ओशो के नव-संन्यास आंदोलन में सर्वप्रथम संन्यस्त मित्रों में से एक हैं। ओशो के साथ बिताये अंतरंग क्षणों की वार्ता को उन्होंने 'वन हंड्रेड टेल्स फॉर टेन थाउजेंड बुद्धाज़' पुस्तक में संजोया है, जो मूलतः अंग्रेज़ी भाषा में है। इस पुस्तक का कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। हिंदी में इसका अनुवाद मा बोधि शशि ने किया है : प्रस्तुत है :– "दस हज़ार बुद्धों के लिए एक सौ गाथाएं" की उन्नचासवीं किश्त...

77

भगवती बहुत खुश है। आज दोपहर वह ओशो से चार महीने बाद मिलने वाली है। ऑप्रेशन कल सुबह ग्यारह बजे का तय है। आज दोपहर ही उसे हॉस्पिटल पहुंच जाना है।

दोपहर तीन बजे हम टैक्सी से वुडलैंड्स पहुंच जाते हैं। ओशो मुस्कुराते हुए भगवती का स्वागत करते हैं और उसकी आंखों से अहोभाव के आंसू टपक पड़ते हैं। वह ओशो के चरण स्पर्श करती है और ओशो उसके सिर पर अपना हाथ रख देते हैं। मुझे महसूस होता है कि हमारे आस-पास कुछ अद्‌भुत घट रहा है। सभी मौन हैं। शायद ओशो भगवती पर शक्तिपात कर रहे हैं। मैं देख रही हूं कि भगवती के चेहरे के चारों ओर एक आभामंडल दमक रहा है। ओशो अपनी आंखें खोलकर मुस्कुराते हैं और कहते हैं, 'अच्छा भगवती।'

मेरी ओर देखकर ओशो कहते हैं, 'ज्योति अपना ख्याल रखना।' और फिर वे बाथरूम में चले जाते हैं। मैं भगवती का हाथ पकड़ती हूं जिसमें गर्माहट है और जो ऊर्जा से लबालब भरा है।

हम समय से हॉस्पिटल पहुंच जाते हैं जहां सब प्रबन्ध भली भांति किए जा चुके हैं। भगवती का मित्र भी वहां पहुंच जाता है। कल सुबह पाटकर हॉल में ओशो का प्रवचन है और हम तय करते हैं कि प्रवचन के बाद कुछ संन्यासी हॉस्पिटल पहुंच जाएंगे और ऑप्रेशन के समय मौजूद रहेंगे। भगवती काफी उत्साहित है। मैं उसे गले लगाती हूं और घर वापस लौट आती हूं।

78

आज सुबह 8.30 बजे ओशो पाटकर हॉल में महावीर पर बोल रहे हैं। प्रवचन के बाद करीब 10.00 बजे, कबीर और करुणा हॉस्पिटल चले जतो हैं और मैं भगवती के पास शाम को जाने का सोच अपने ऑफिस चली जाती हूं। करीब 12.00 बजे मुझे लक्ष्मी का फोन आता है कि 'भगवती की हालत गंभीर है और मैं उसके माता-पिता को यह संदेश भिजवा दूं।' भगवती के घर कोई फोन नहीं है। मुझे कुछ समझ नहीं आता, सो मैं भगवती को देखने निकल पड़ती हूं।

टैक्सी पकड़ कर पंद्रह मिनट में मैं हॉस्पिटल पहुंच जाती हूं। वहां हॉस्पिटल के बरामदे में भगवती की चाची को रोता देख मैं हक्की-बक्की रह जाती हूं। मैं दौड़ी-दौड़ी भगवती के कमरे में पहुंचती हूं, जहां से एक नर्स मुझे ऑप्रेशन थियेटर में ले जाती है। मुझे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं आता जब मैं भगवती को चादर से ढकी मृतकाय देखती हूं। उसका चेहरा एकदम शांत है जैसे कि वह गहरे ध्यान में हो। उसे देख मेरा मन एकदम शून्य हो जाता है। मैं उसके सिर को छूती हूं जो एकदम ठंडा है, और रो पड़ती हूं। भगवती के मित्र जो गीता के श्लोक पढ़ रहे हैं, उठकर मुझे गले लगा लेते हैं। धीरे-धीरे मुझे ओशो के शब्द याद आते हैं, 'ज्योति अपना ख्याल रखना', और मैं शांत हो जाती हूं।

ऑप्रेशन थियेटर में बैठे हुए मुझे पूरा घटनाक्रम याद आता है : 1 किस प्रकार ओशो भगवती से माउंट आबू के शिविर में चलने का आग्रह करते हैं; 2 किस प्रकार वह रेल दुर्घटना से बच जाती है और अपनी मृत्यु की तैयारी के लिए उसे चार महीने मिल जाते हैं; **3** ऑप्रेशन के पहले उससे मिलने पर कैसे ओशो उस पर अपनी ऊर्जा उंडेलते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि ओशो उसकी आसन्न मृत्यु के बारे में अच्छी तरह जानते थे, जो कि उनके द्वारा भगवती को लिखे अंतिम पत्र से भी स्पष्ट हो जाता है।

प्यारे ओशो, आपकी करुणा अपार है।

— क्रमशः

(यह पुस्तक ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में उपल)